दि0 19-07-2017

“ व्यक्ति जरूरतमंद है न कि गरीब ”

महोदय,

पूरे विश्व में गरीब एव गरीबी के सम्बन्ध में बाते करना आम बात हैं ! हमारे व्यवहार में भी हर रोज गरीब एव गरीबी की चर्चा होती रहती हैं ! आमतौर पर गरीब उस व्यक्ति को माना जाता हैं जिसके पास धन का अभाव हैं यदि हम धन के अभाव के आधार पर किसी को भी गरीब का सम्बोधन करते हैं तो पायेगें कि विश्व में धनवान से धनवान व्यक्ति पर भी धन की कमी रहती हैं परन्तु हम उसे गरीब नही कहते !

जब हम गरीब की परिभाषा धन के अभाव पर करते हैं तो धनवान से धनवान व्यक्ति पर भी धन का अभाव होने के कारण उसकी भी गिनती गरीब में होनी चाहिये या फिर गरीब की जगह **“ जरूरतमंद ”** शब्द का प्रयोग होना चाहिये ! क्योकि हर व्यक्ति को धन की जरूरत हैं हर व्यक्ति धन चाहता हैं ! इसलिए इस दुनिया में गरीबी शब्द को डिक्शनरी से निकाल देना चाहिये ! जिस व्यक्ति को हम गरीब कहते हैं वो वास्तव में गरीब न होकर जरूरतमंद हैं ! इसलिए उसे भी उस सम्मान की दृष्टि से देखा जाना चाहिये जिस दृष्टि से धनवान से धनवान व्यक्ति को धन की जरूरत में देखा जाता हैं!

अक्सर देखा जाता हैं जो जितना बडा धनवान होता है उसको उतने ही ज्यादा धन की आवश्यकता होती हैं ! इसलिए धन की जरूरत वाले व्यक्ति को गरीब नही **जरूरतमंद** शब्द से अंलकृत किया जाना चाहिये !

गरीब शब्द से व्यक्ति कुंठित महसूस करता हैं ! जैसे **- “ गरीबी तेरे तीन नाम गुंडा – लुच्चा - बेईमान ”** ! जबकि देखा ये जाता हैं कि अलग अलग लोगो की अलग अलग जरूरत हैं व उसी आधार पर **व्यक्ति जरूरतमंद है न कि गरीब** हैं !

(सत्यप्रकाश रेशू) 9837058160
रेशू चौक, रेशू विहार, सरकुलर रोड,
मुजफ्फरनगर - (उ0प्र0) - 251001